॥ प्रेरणा स्रोत ॥

गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।

– श्रीकृष्णकालीन महर्षि वेदव्यास

महर्षिवेदव्याससेपूर्व कोई भी शास्त्र पुस्तक के रूप में उपलब्ध नहींथा।श्रुतज्ञान कीइसपरम्पराकोतोड़तेहुएउन्होंनेचारवेद,ब्रह्मसूत्र,महाभारत,भागवतएवं गीता जैसे-ग्रन्थों में पूर्व संचित भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञानराशि को संकलित कर अन्त में स्वयं ही निर्णय दिया कि 'सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः'- सारे वेदों के प्राण उपनिषदों का भी सार है गीता, जिसे गोपाल श्रीकृष्ण ने दूहा और अशान्त जीव कोपरमात्माकेदर्शनऔर साधन कीस्थितिसेशाश्वत शान्ति कीस्थिततिकपहुँचाया।उनमहापुरुषनेअपनीकृतियोंमेंसेगीताकोशास्त्र की संज्ञा देते हुए स्तुति की और कहा – 'गीता सुगीता कर्तव्या' गीता भलीप्रकार मनन करके हृदय में धारण करने योग्य है, जो भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निःसृत वाणी हैफिरअन्यशास्त्रोंकेसंग्रहकीक्याआवश्यकता?

गीता का सारांश इस श्लोक से प्रकट होता है– 'एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतम् , एको देवो देवकीपुत्र एव। एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि, कर्माप्येको तस्य देवस्य सेवा।' अर्थात् एक ही शास्त्र है जो देवकीपुत्र भगवान् ने श्रीमुख से गायनकिया-गीता! एक ही प्राप्त करने योग्य देव है। उस गायन में जो सत्य बताया- आत्मा! सिवाय आत्मा के

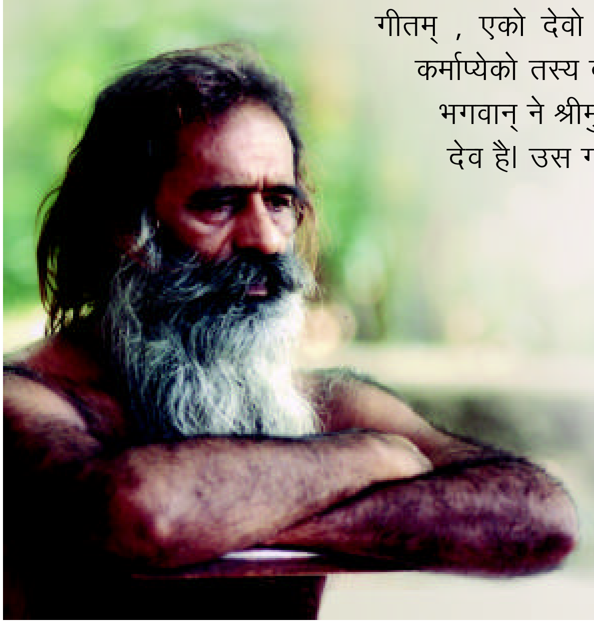

गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।

कुछ भी शाश्वत नहीं है। उस गायन में उन महायोगेश्वर ने क्या जपने के लिए कहा? ओम्। अर्जुन! ओम् अक्षय परमात्मा का नाम है। उसका जप कर और ध्यान मेरा धर। एक ही कर्म है गीता में वर्णित परमदेव, एक परमात्मा की सेवा। उन्हें श्रद्धा से अपने हृदय में धारण करो। अस्तु, आरम्भ से ही गीता आपका शास्त्र रहा है।

भगवान् श्रीकृष्ण के हजारों वर्ष पश्चात् परवर्ती जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया, गीता के ही संदेशवाहक हैं। ईश्वर से ही लौकिक, पारलौकिक सुखों की कामना, ईश्वर से डरना, अन्य किसी को ईश्वर न मानना-यहाँ तक तो सभी महापुरुषों ने बताया, किन्तु ईश्वरीय साधना, ईश्वर तक की दूरी तय करना-यह केवल गीता में ही सांगोपांग क्रमबद्ध सुरक्षित है। देखिए-'यथार्थ गीता'! गीता से सुख, शान्ति, समृद्धि तो मिलती ही है किन्तु यह अक्षय, अनामय परमपद भी देती है।

यद्यपि विश्व में सर्वत्र गीता का समादर है फिर भी यह किसी मज़हब या सम्प्रदाय का साहित्य नहीं बन सका, क्योंकि सम्प्रदाय किसी न किसी रूढ़ि से जकड़े हैं। भारत में प्रकट हुई गीता विश्व-मनीषा की धरोहर है। गीता आध्यात्मिक देश भारत एवं नेपाल की आध्यात्मिक धरोहर है। अतः इसे राष्ट्रीय शास्त्र का मान देकर ऊँच-नीच, भेदभाव तथा कलह परम्परा से पीड़ित विश्व की सम्पूर्ण जनता को शान्ति देने का सत्प्रयास करें।